Pushpa Chauhan
Professor, (Deptt. of Economics)
Vaishali Mahila College, Hajipur

Part - III
Paper - IV

आर्थिक विकास के निर्धारक तत्व

विश्व के समस्त देशों में आर्थिक वृद्धि हुई है लेकिन उनकी वृद्धि दरें एक दूसरे से भिन्न हैं क्योंकि सभी देशों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, तकनीकी एवं अन्य स्थितियों में भिन्नता पायी जाती है। यही स्थितियां आर्थिक वृद्धि के निर्धारक तत्व होते हैं।

प्रत्येक देश के आर्थिक विकास की पृष्ठभूमि में कुछ ऐसे तत्व पाए जाते हैं जिसपर उस देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है। इन तत्वों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया जाता है।

1. आर्थिक तत्व
2. गैर आर्थिक तत्व

आर्थिक तत्व - आर्थिक तत्व वह तत्व होते हैं जो किसी देश के विकास को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर उनमें होने वाले परिवर्तनों के फलस्वरूप बढ़ती अथवा घटती है। आर्थिक विकास को निर्धारित करने वाले आर्थिक तत्व के निम्न घटक हैं।

1. प्राकृतिक संसाधन - बामोल अपनी पुस्तक Economic DYNAMICS में लिखते हैं "प्राकृतिक संसाधन आर्थिक प्रगति के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं।" प्राकृतिक साधनों से अभिप्राय उन सभी भौतिक या नैसर्गिक साधनों से है जो प्रकृति की ओर से किसी देश को उपहारस्वरूप प्राप्त होता है। किसी देश का आर्थिक विकास उस देश में उपलब्ध प्राकृतिक साधन और- उपलब्ध भूमि, भूमि की उर्वरता, नदियों की सिंचाई क्षमता, जलवायु, वर्षा,

Scanned with CamScanner

... श्रम से प्राप्त खनिज सम्पदा पर निर्भर करता है।
प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा विकास की समस्या को देश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा के सन्दर्भ में देखा गया। उनका मानना था कि दीर्घकाल में प्राकृतिक संसाधनों में कमी आएगी जिससे विकास अवरुद्ध होगा।

रिचर्ड टी. गिल के अनुसार 'जनसंख्या एवं श्रम की पूर्ति की तरह प्राकृतिक संसाधन भी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करते हैं और उर्वरक मिट्टी एवं जल के अभाव में कृषि विकास नहीं हो पाएगा। लोहा कोयला एवं खनिज पदार्थों के अभाव में औद्योगीकरण की प्रक्रिया बाधित होती है उसी प्रकार जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियों के प्रतिकूल होने से आर्थिक क्रियाओं का विस्तार ~~~~ सम्भव नहीं।

प्राकृतिक संसाधनों का प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने से ही आर्थिक विकास होगा यह आवश्यक नहीं है। बल्कि, इन साधनों का समुचित एवं विवेकपूर्ण विदोहन होना चाहिए। वर्तमान समय में संसाधनों की संरक्षण एवं विनाश की समस्या उत्पन्न हो रही है। वह संसाधन जिसका पुनः उत्पादन नहीं हो सकता है उसकी कमी को तकनीकी स्वरूप में परिवर्तन कर पूर्ण किया जा सकता है।

प्राकृतिक संसाधनों का बहुल उपभोग के साथ मितव्ययितापूर्ण उपभोग किया जाना चाहिए ताकि संसाधनों का क्षरण न हो। अर्द्धविकसित देशों में पूंजी, तकनीक एवं उद्यमशीलता के अभाव के कारण प्राकृतिक संसाधनों का समुचित विदोहन नहीं हो पाता है।

आर्थर लेविस के अनुसार - किसी देश के विकास का स्वरूप उस देश के संसाधनों द्वारा निर्धारित होता है।

2. पूंजी निर्माण (Capital formation) - सामान्यतः पूंजी निर्माण से अभिप्राय देश की वास्तविक पूंजी में वृद्धि होना है। व्यापक अर्थ में पूंजी निर्माण में भौतिक एवं अभौतिक पूंजी (शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशिक्षण, कुशलता निर्माण) की वृद्धि सम्मिलित किया जाता है। पूंजी निर्माण बचत पर निर्भर करता है। लेकिन सिर्फ बचतों का होना ही पर्याप्त दशा नहीं है। पूंजी निर्माण के लिए तीन स्वतन्त्र क्रियाओं का होना आवश्यक है।

a. शुद्ध बचतों के परिमाण में वृद्धि होने पर जिस साधन का प्रयोग उपभोग के लिए किया जाता है अतः पूंजी निर्माण की ओर प्रवाहित किया जाए

b. ऐसी निवेश एवं साख प्रणाली की स्थापना जो उपलब्ध बचतों को क्रियाशील कर सके।

c. पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादन के लिए विनियोग की क्रिया को बढ़ाया जाए।

अल्पविकसित देशों में प्रति व्यक्ति आय कम होने से बचत कम होती है, आय में थोड़ी सी वृद्धि होने पर उसे उपभोग पर व्यय कर दी जाती है जिससे पूंजी निर्माण कम होता है।

घरेलू उपभोग पर नियन्त्रण के लिए सरकार करारोपण, सार्वजनिक उधार आदि के तरीके को अपनाती है, छिपी हुई बेरोजगारी के उपयोग द्वारा भी पूंजी निर्माण किया जा सकता है, कृषि क्षेत्र में अनुत्पादक श्रम को निर्माण कार्यों में रोजगार प्रदान कर उनकी आय वृद्धि के लिए प्रयास किए जाते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रो० नर्क्स का कहना है कि "पूंजी निर्माण आर्थिक विकास की एक प्रमुख आवश्यकता है।" देश के आर्थिक विकास के लिए बड़ी मात्रा में पूंजी एवं पूंजीगत वस्तुओं की आवश्यकता होती है। जिस देश के पास यह साधन जितना अधिक होगा अन्य बातें सामान्य रहने पर उनका आर्थिक विकास उतना ही अधिक होगा।

2. प्रो० कुजनेट्स के शब्दों में "पूंजी एवं पूंजी का संचय आर्थिक विकास की एक अनिवार्य आवश्यकता है।"

3. मानवीय साधन - मानवीय साधनों से अभिप्राय किसी देश में निवास करने वाली जनसंख्या से है। श्रम प्राचीन काल से ही उत्पादन का एक महत्वपूर्ण एवं सक्रिय साधन है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री Adam Smith का कहना था कि "प्रत्येक देश का वार्षिक श्रम वह कोष है जो मूल रूप से जीवन की आवश्यकताओं एवं सुविधाओं की पूर्ति करता है।"

मानवीय श्रम ही वह शक्ति है जिस पर देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है। [illegible] जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास की पूर्व आवश्यकता है लेकिन तीव्र गति से जनसंख्या का बढ़ना तभी तक श्रेयस्कर माना जाता है जब तक उसका प्रति व्यक्ति उत्पादन पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़े।

विकासशील देशों में तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या चिन्ता का विषय है क्योंकि इन देशों में उत्पाद वृद्धि दर सापेक्षिक रूप से न्यून रहती है। जनवृद्धि के कारण संसाधनों का तेजी से क्षरण होता है। आर्थिक वि

की सम्भावना तब तक न्यून रहेगी जब तक जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण न हो।

अतः आवश्यक है कि आर्थिक विकास के लिए मानवीय शक्ति का सही रूप से उपयोग किया जाए।

4. तकनीकी प्रगति एवं नवप्रवर्तन - प्रो० शुम्पीटर के अनुसार तकनीकी प्रगति एवं नव परिवर्तन आर्थिक विकास को तीव्र गति प्रदान करने का मुख्य प्रेरक तत्व है।

प्रो० जे हीन वर्जन ने तकनीकी प्रगति को श्रम-उत्पाद अनुपात तथा पूंजी-उत्पाद अनुपात के रूप में व्यक्त किया है।

तकनीकी प्रगति उत्पादन की प्रक्रिया में सुधरी हुई तकनीक के प्रयोग को सुनिश्चित करती है। तकनीकी प्रगति हेतु वैज्ञानिक ज्ञान के स्तर में वृद्धि आवश्यक है तभी व्यक्ति इस ज्ञान का प्रयोग आर्थिक विकास के लिए करेगा। वस्तुतः तकनीकी प्रगति को वैज्ञानिक खोज, आविष्कार एवं नवप्रवर्तन के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

तकनीकी ज्ञान उत्पादन की विधियों में मौलिक परिवर्तन लाकर आर्थिक विकास के कार्य को गति प्रदान करता है। विकसित देशों की विकास वृद्धि की दर बुनियादी रूप से उनके द्वारा की गयी तकनीकी एवं नव प्रवर्तनों की खोज पर आधारित हो रहती है। इसके विपरीत अल्पविकसित देशों में तकनीकी ज्ञान के अभाव में उत्पादन की पुरानी एवं अवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है जिस कारण इन देशों का आर्थिक विकास आज भी पिछड़ी हुई अवस्था में है।

Contd

Scanned with CamScanner